शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

विकास प्रशासन–समाज की मूलभूत आवश्यकता

प्राप्तिः 01.05.2023
स्वीकृतः 24.06.2023

34

प्रो० शशि वशिष्ठ
पूर्व प्राचार्या एवं विभागाध्यक्षा, राजनीति विज्ञान विभाग
एस०एस०वी० (पी०जी०) कॉलिज, हापुड
ईमेलः *shyamkumarhapur3@gmail.com*

जितेन्द्र कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विाभाग
एस०एस०वी० (पी०जी०) कॉलिज, हापुड़

सारांश

विकास प्रशासन सदैव जन–आकांक्षाओं की पूर्ति और नागरिक सेवाओं के प्रति जागरूक एवं प्रयत्नशील रहता है। विकास के समस्त कार्यक्रम जनहित की ओर ध्यान में रखकर जनता की सुविधाओं के लिए लागू किए जाते हैं। आज के युग में अधिकांश देश यह बताने का प्रयास करते हैं कि हमारे देश का प्रशासन जनता के लिए, जनता के द्वारा और जनता का प्रशासन है। अतः वे निरन्तर जनता के हितों के लिए विकास की योजनाओं को लागू करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। परिणामोन्मुख होना विकास प्रशासन की प्रमुख विशेषता है। इसमें विकास के कार्यक्रमों को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत लागू करना होता है तथा अच्छे परिणाम लाने का प्रयास किया जाता है।

मुख्य बिन्दु

विकास प्रशासन, सामाजिक प्रगति, आर्थिक प्रगति, विकासशील, जनकल्याण।

विकास प्रशासन के संदर्भ में विकास को एक गतिशील परिवर्तन के रूप में देखा जाता है जिसमें एक अवस्था से दूसरी अवस्था की ओर जाना हेाता है तथा जो समाज को परंपरागत स्थिति से आधुनिक स्थिति की ओर लाता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समाज व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, भौगोलिक क्षेत्र एवं संस्कृति सभी परिवर्तन की सतत् प्रक्रिया में हैं। विकास, प्रगति एवं उद्विकास परिवर्तन के विभिन्न तरीके हैं। उद्विकास स्वतः स्फूर्त और यांत्रिक होते हैं जबकि अन्य उद्देश्यपूर्ण, नियोजित एवं मानव प्रयत्नों का परिणाम होते हैं। विकास मानव निर्मित भौतिक परिवेश और आधारभूत संरचनाओं में होने वाले नियोजित परिवर्तन का परिणाम है। विकास की अवधारणा न तो नवीन है और न ही प्राचीन।[1] विकास की अवधारणा मुख्यतः द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान देखने को मिलती है और 1960 के बाद इसका महत्व बढ़ा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विकासशील देशों के लिये 'राष्ट्रीय विकास' केन्द्र–बिन्दु बन गया। यह सामाजिक गतिविधियों से प्रभावित होता है जो सदैव राष्ट्रीय विकास एवं सामाजिक–आर्थिक प्रगति की ओर निर्देशित होता है।[2] आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार 'विकास' शब्द का अर्थ उच्चतर, पूर्णतर और अधिकतर परिपक्वतापूर्ण वर्धन की

स्थिति है।[3] विकास एक सापेक्ष शब्द है जो स्थान, विषय, संदर्भ तथा परिस्थितियों के अनुसार परिभाषित एवं विश्लेषित किया जाता है। सामान्य रूप से विकास का आशय प्रगति अर्थात् एक संतोषप्रद परिस्थिति की अवस्था को पीछे छोड़कर बेहतर परिस्थिति की अवस्था की ओर अग्रसर होना है। हेन–बीन–ली के अनुसार 'विकास' प्रगतिशील राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों की उपलब्धि के लिए नए अनवरत परिवर्तनों का सामना करने के संबंध में प्रणाली की क्षमताओं में सतत् विकास अर्जित करने की प्रक्रिया है। अर्थशास्त्र की दृष्टि से विकास शब्द के दो अर्थ लगाए जाते हैं पहला, "टेकआफ' की स्थिति जहाँ से अर्थव्यवस्था स्वतः ही आगे बढ़ती रहती है और दूसरा, इस स्थिति तक पहुँचने की प्रक्रिया। अतः 'टेकआफ' की स्थिति पाने पर विकसित और उससे पहले विकासशील अवस्था कही जाती है।

उन्नीसवीं सदी की तुलना में आज विकास की प्रकृति अलग प्रकार की है। यह अनिश्चितताओं का रूप लिये है। विकास शब्द का कोई विशिष्ट अर्थ नहीं है अर्थशास्त्री इसे आर्थिक उत्पादकता के रूप में परिभाषित करते हैं; समाजशास्त्री इस शब्द का प्रयोग सामाजिक परिवर्तन के रूप में करते हैं; राजनीतिक विचारक इसे जनतंत्रकरण; राजनीतिक क्षमता तथा विस्तारशील सरकार के रूप में करते हैं; प्रशासक इसे अधिकारीतंत्र, प्रशासनिक कुशलता एवं क्षमता के रूप में मानते हैं।[4] एडवर्ड वीडनर के शब्दों में, "विकास गतिशील है जो सदैव चलता रहता है। विकास मन की स्थिति, प्रवृत्ति और एक दशा है जो एक निश्चित लक्ष्य के बजाय एक विशिष्ट दिशा में परिवर्तन की गति है।"[5] जॉन माण्टगोमरी के अनुसार, "विकास जो अभीष्ट अथवा परिवर्तनशील होता है।"[6] एफ. डब्ल्यू रिग्स ने "विकास को विवर्तन के उभरते स्तर द्वारा सम्भाव्य सामाजिक प्रणालियों की वर्द्धमान स्वायत्त्ता (विवेक) की प्रक्रिया के रूप में माना है।"[7] कोमल एवं गेजर के अनुसार, "विकास का अर्थ परिवर्तन के साथ–साथ प्रगति होना भी है।" टी0एन0 चतुर्वेदी के अनुसार, "विकास सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है।"[8] माइकल टोडारो के अनुसार, "विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें संरचना, दृष्टिकोण तथा संस्थागत परिवर्तन होता है तथा आर्थिक संवृद्धि में बढ़ोत्तरी, असमानता में कमी तथा संपूर्ण गरीबी का उन्मूलन होता है।" चि–यूएन–वी के अनुसार, "विकास, परंपरागत समाज से आधुनिक समाज की ओर सामाजिक रूपान्तरण की प्रक्रिया है और वास्तव में यह रूपान्तरण आधुनिकीकरण के नाम से भी जाना जाता है।"[9] ब्रुटलैण्ड आयोग की प्रतिवेदन ने भी विकास को व्यापक रूप से सामाजिक और आर्थिक बदलाव के रूप में देखा है।

विकास प्रशासन में जनता की सेवा के लिए विकास कार्यों को करना निहित है। भारतीय विद्वान यू.एल. गोस्वामी ने 1955 में "The Indian Journal of Public Administration" में 'भारत में विकास प्रशासन की संरचना' नामक अपने लेख में सामुदायिक विकास कार्यक्रम के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया था।[12] एडवर्ड वीडनर को विकास प्रशासन की अवधारणा को विश्व के सामने विस्तारित करने का श्रेय जाता है। इसको औपचारिक मान्यता उस समय प्रदान की गयी जब Comparative Administration Group of the American Society for Public Administration तथा Committee of Comprative Politics of the Social Science Research Council of the U.S.A. ने इसके बौद्धिक आधार का निर्माण किया।[13] इस American Society for Public Administration के अंतर्गत 1963 में विकासशील राष्ट्रों में

प्रशासनिक समूह (Comparative Administrative Group- CAG) का गठन किया गया और इस समूह ने विकास प्रशासन के क्षेत्र में अनुसंधान करने के लिए तीसरी दुनिया के विकासशील राष्ट्रों को अपने अध्ययन का केन्द्रबिन्दु बनाया तथा इन राष्ट्रों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के संदर्भ में प्रशासनिक समस्याओं के अध्ययन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। इस समूह ने यह पता लगाने का प्रयास किया कि तीसरी दुनियाँ के विकासशील देशों में प्रशासन का किस भाँति का मॉडल तथा तकनीक हो ताकि उनके विकास की रफ्तार तीव्रतर हो सके। नियोजित परिवर्तन समाज में सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन लाता है जो विकासशील देशों हेतु आवश्यक है। विकास प्रशासन की इस अवधारणा ने परंपरागत प्रशासन को विकासात्मक प्रशासन की ओर उन्मुख कर दिया है। वर्तमान में वह प्रशासन जो इन विकासशील देशों के विकास एवं उन्नति के लिए होता है उसे विकास प्रशासन कहते हैं।

विकास प्रशासन का अर्थ प्रशासन के आधुनिकीकरण से लगाया जाता है। सामान्य तौर पर विकास प्रशासन राज्य द्वारा जनता की बढ़ती हुई विकासात्मक आवश्यकताओं एवं मांगों को संतुष्ट करने की क्षमता से सम्बन्धित है। विकास प्रशासन का सम्बन्ध राष्ट्रीय विकास को पूरा करना होता है। परिवर्तन के लक्ष्य, मूल्य तथा रणनीतियाँ भिन्न–भिन्न हो सकती हैं परन्तु कुछ मूल प्रक्रियाएँ होती हैं जिनके द्वारा लक्ष्यों पर सहमति प्राप्त की जाती है और योजनाएँ, नीतियाँ, कार्यक्रम तथा प्रोजेक्ट (4P"s-Plans, Policies, Programmes and Project) बनाए और लागू किए जाते हैं।[14] विकासशील देशों की समस्याएँ भी 4P"s के नाम से जानी जाती हैं। उनमें Proliferation (हथियारों की होड़), Poverty (गरीबी), Pollution (प्रदूषण) तथा Population (जनाधिक्य) सम्मिलित हैं। संगठन के आधार के रूप में लूथर गुलिक ने भी 4P"s सिद्धांत का प्रतिपादन किया है जिसके अनुसार संगठन में Person (व्यक्ति), Purpose (उद्देश्य), Place (स्थान) तथा Process (प्रक्रिया) मूलभूत आधार हैं।[15] कतिपय विद्वान विकास प्रशासन का सम्बन्ध प्रशासन के आन्तरिक तत्वों[16] की बजाय बाह्य तत्वों (जो प्रशासन को प्रभावित करते हैं) से अधिक मानते हैं प्रो0 एफ0डब्ल्यू0 रिग्स सामूहिक निर्णय लेने तथा उन्हें लागू करने की योग्यता को बढ़ाना ही विकास का पारिस्थितिक दृष्टिकोण मानते हैं[17] और विकास प्रशासन "निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपलब्ध साधनों के उपयोग में प्रभावकारिता वृद्धि की एक प्रणाली है।"[18] प्रो0 एफ.डब्ल्यू. रिग्स ने लिखा है, "विकास प्रशासन केवल भौतिक, मानवीय एवं सांस्कृतिक वातावरण के रूप में परिवर्तन के लिए अभिकल्पित कार्यक्रमों को पूरा करने के सरकारी प्रयासों को ही नहीं कहेंगे बल्कि ऐसे कार्यक्रमों में अपने को लीन करने की क्षमता को बढ़ाने के प्रयासों को भी कहेंगे।"[19] प्रो0 रिग्स का मानना है कि जिस प्रकार कृषि कार्यक्रम का प्रशासन 'कृषि प्रशासन' और स्वास्थ्य का प्रबंध करने वाला प्रशासन 'स्वास्थ्य प्रशासन' होगा उसी प्रकार से विकास कार्यों का प्रबंध करने वाला प्रशासन 'विकास प्रशासन' होगा।

सरकार के संचालन तथा विकास की दिशा में प्रशासन की भूमिका सर्वविदित है। सरकार का स्वरूप कुछ भी हो उसके दायित्वों में निरंतर वृद्धि हो रही है। यह सत्य है कि समाज सरकार के माध्यम से बोलता है और सरकार की नीति, योजना, कार्यक्रम आदि प्रशासन के माध्यम से कार्यान्वित होते हैं। विकासशील देशों की आर्थिक–सामाजिक व्यवस्था के साथ–साथ प्रशासनिक स्थिति भी शोचनीय है।

प्रशासन राष्ट्रीय–निर्माण तथा सामाजिक–आर्थिक प्रगति के लक्ष्यों को प्राप्त कराने वाले महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है। परन्तु विकासशील देशों में यह परंपरागत एवं अप्रभावी उपकरण है। हमारी पंचवर्षीय योजना के प्रलेखों में बताया गया है कि नियोजन और उसके क्रियान्वयन में काफी अंतर है। इसके मूल कारण उनके प्रशासन का ढांचा औपनिवेशिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए गठित किया जाना है। अतः विकास के साथ प्रशासनिक विकास भी आवश्यक है।

प्रशासनिक विकास, प्रशासनिक क्षमताओं का नवीन समस्याओं को सुलझाने के लिए अधिक मजबूत बनाने के लिए भीतरी परिवर्तन की गति का अध्ययन है। प्रशासन का विकास या प्रशासनिक विकास एक नवीन अवधारणा है जिसका अर्थ है प्रशासनिक व्यवस्था का विकास करना।[20] अर्थात् प्रशासन को निरंतर क्रियाशील बनाना, प्रशासनिक कुशलताओं को उत्तरोत्तर विकसित करना। प्रशासनिक विकास के विचार में यह भाव अन्तर्निहित है कि प्रशासन के परंपरागत रूप में जो कमियाँ हों अथवा रिक्तता हो उसे दूर करके प्रशासन को नवीन परिवर्तित तथा विकासशील परिस्थितियों के अनुकूल बनाना। अतः विकासवादी प्रशासन के लिए प्रशासन को तैयार किया जाता है। इसमें विशिष्ट या निर्दिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रशासन, उसकी संरचनाओं, प्रक्रियाओं, क्रियाविधियों, सेवीवर्ग तथा उनकी गतिविधियों को तैयार किया जाता है। रिग्स के अनुसार, 'प्रशासनिक विकास' निर्दिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपलब्ध साधनों को उपयोग करने की बढ़ती हुई प्रभावशीलता का प्रतिमान है।[21] श्री रजनी कोठारी ने 'भारत में राजनीति' का अध्ययन करते समय समाज के सरकारीकरण की प्रक्रिया को सामने रखा है, जिसके कारण प्रशासनिक व्यवस्था का महत्व निरंतर बढ़ता जाता है।[22] वर्तमान में प्रशासन नीति निर्माण में सहायता देता है और उसके क्रियान्वयन के लिए स्वयं उत्तरदायी भी होता है। अतः प्रशासनिक व्यवस्था का विकास ही प्रशासनिक विकास है। फ्रैड डब्ल्यू रिग्स के विकास सिद्धांत की मूल प्रस्तावना यह है कि व्यवस्थाओं में जितना अधिक रचनात्मक विभिन्नीकरण एवं विशेषीकरण होगा, उसमें उतनी ही अधिक समस्याओं का सामना करने तथा लक्ष्य प्राप्ति की क्षमता होगी। प्रशासनिक विकास का मुख्य सम्बन्ध विशेषतः विकासशील देशों में लाये जाने वाले लक्ष्यों, परिवर्तनों, प्रयोजनों, संगठनों, कार्यक्रमों, अभिकरणों, प्रक्रियाओं, अधिकारियों एवं प्रविधियों आदि से है।[23] जे.एन. खोसला के अनुसार, "प्रशासनिक विकास में नौकरशाही की नीतियों, कार्यक्रमों, क्रियाविधियों, कार्य पद्धतियों, संगठनात्मक संरचनाओं तथा भर्ती प्रतिमानों, विभिन्न प्रकार के विकास, सेवीवर्ग तथा प्रशासन के ग्राहकों के साथ सम्बन्ध प्रतिमान की संख्या एवं विशेषताओं में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार को शामिल किया जाता है।[24] टी.एन. चतुर्वेदी के अनुसार, "प्रशासनिक विकास का अभिप्राय है प्रशासन को उत्तरोत्तर सुचारू और क्रियाशील बनाना तथा प्रशासनिक दक्षता और क्षमताओं को उत्तरोत्तर विकसित करना। इसके विचार में यह भाव अन्तर्निहित है कि प्रशासन के परंपरागत रूप में जो कमियाँ हों अथवा रिक्तता हो उसे दूर करके प्रशासन को नवीन परिवर्तित तथा विकासशील परिस्थितियों के अनुरूप बनाना।"[25] संक्षेप में प्रशासनिक विकास का अर्थ है प्रशासन के वर्तमान स्वरूप में गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन। इसका अर्थ नौकरशाही का विकेन्द्रीकृत किया जाना तथा उसे उपलब्धि प्रधान बनाया जाना है।

वर्तमान में अधिकांश विभाग तथा संगठन विकास कार्यक्रमों से किसी–न–किसी रूप में संबंधित अवश्य हैं, अतः विकास प्रशासन तथा गैर–विकास प्रशासन के मध्य द्विविभाजन करना सरल नहीं है[30]

और न ही इसकी कोई आवश्यकता है क्योंकि दोनों के मध्य किंचित मात्रात्मक अंतर ही है। वास्तव में बीसवीं सदी से पूर्व सभी देशों में न्यूनाधिक मात्रा में नियामकीय प्रशासन प्रवर्तित था जो आज बदली हुई परिस्थितियों के कारण विकास प्रशासन का स्वरूप धारण कर चुका है।

विकासशील देशों के लिए आधुनिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक हो गया है। इसमें परिवर्तन और नवीन दृष्टिकोण जैसे कार्य अवश्यम्भावी हो जाते हैं। देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के लिए विकास प्रशासन प्रयत्नशील रहता है। विकास प्रशासन को इन नवीन उद्देश्यों को प्राप्त करने योग्य अपने को बनाना पड़ता है। इसके लिए प्रशासनिक आधुनिकीकरण के लिए विकास प्रशासन विकसित देशों से मापदंड प्राप्त करता है। नवीन दृष्टिकोण, तकनीकी का विकास प्रशासनिक आधुनिकीकरण में सहायक सिद्ध होते हैं। आधुनिकीकरण के लिए विकास प्रशासन को सुदृढ़ एवं लक्ष्योन्मुखी बनाया जाता है। विकास प्रशासन में प्रशासनिक कुशलता को इसलिए महत्व दिया जाता है क्योंकि इसके अभाव में विकास के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करना संभव नहीं है। विकास प्रशासन के लिए जो नीतियाँ और योजनाएँ बनायी जाती हैं तथा जो लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं उन्हें कम से कम समय और लागत में कुशलतम ढंग से प्राप्त कर लेना प्राथमिक कार्यकुशलता है।

विकास प्रशासन सदैव जन–आकांक्षाओं की पूर्ति और नागरिक सेवाओं के प्रति जागरूक एवं प्रयत्नशील रहता है। विकास के समस्त कार्यक्रम जनहित की ओर ध्यान में रखकर जनता की सुविध ाओं के लिए लागू किए जाते हैं। आज के युग में अधिकांश देश यह बताने का प्रयास करते हैं कि हमारे देश का प्रशासन जनता के लिए, जनता के द्वारा और जनता का प्रशासन है। अतः वे निरन्तर जनता के हितों के लिए विकास की योजनाओं को लागू करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। परिणामोन्मुख होना विकास प्रशासन की प्रमुख विशेषता है। इसमें विकास के कार्यक्रमों को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत लागू करना होता है तथा अच्छे परिणाम लाने का प्रयास किया जाता है। इसमें इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि उसके क्या परिणाम सामने आये हैं।

किसी भी समाज में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विकास के लिए परिवर्तन का नियोजित किया जाना जरूरी है। परंपरागत प्रशासन नौकरशाही पर आधारित था जबकि विकास प्रशासन में प्रशासन तंत्र को राजनीतिज्ञों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ मिलजुलकर कार्य करना होता है। संस्थात्मक सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन में प्रशासन मुख्य एजेंट के रूप में कार्य करता है। परन्तु सामाजिक–आर्थिक विकास की चुनौतियों का सामना करने के लिए नौकरशाही के लिए यह जरूरी है कि वह नए वातावरण के अनुसार स्वयं को ढाले तथा नियमों के जाल में बंधकर नहीं बल्कि विशिष्ट परिस्थिति में स्वविवेक तथा जनसहयोग से कार्य करे।

सन्दर्भ

1. Sapru, R.K. (2012). "Development Adminisitration". sterling Publishers Private Ltd.: New Delhi. Pg. **3.**
2. अवस्थी, प्रो0 आनन्द प्रकाश. (2007). 'विकास प्रशासन'. लक्ष्मीनारायण अग्रवालः आगरा. पृष्ठ **3.**

3. Hornby, A.S. (2010). The Concise Oxford Dictionary of Current English. Ninth Edition. Oxford Universtiy Press. Pg. **369-370.**
4. Caiden, J.E. (1971). "The Dynamics of Public Administrantion, Guideliness to current transformation in theory and practise". Rhine Haat &Winston: New York. Pg. **267.**
5. Weidners, E. (1962). "Development Adiministration: A New focus for Research". Farel Hady and stock (Ed.). Papers on comparative Public Administration. IPA. University of Michigan. Pg. **88.**
6. Montagomary, John. (1966). "A Royal Invitation: Variations in three Classical themes". Approaches to Development: Politics, Administration and change. McGraw Hill: New York. Pg. **259.**
7. Riggs., Fred. (1970). "The Idea of Development". Riggs (Ed.). The frotiers of Development Administration. Duke University, Press: Durham. Pg. **69.**
8. Chaturvedi, T.N. (1978). "Development: The Dynamics thorns and thistles". in Sudesh Kumar Sharma (ed.). Dynamics of Development: An International perspective: New Delhi. Vol. 1.2. Pg. **693.**
9. Chi-Yuen, Wu. "The Nature of Modern Development: Challenge of Under development and Mal development". in Sharma (ed.). Op. cit. Vol. 1. Pg. **2.**
10. Haidy., Ferral. (1966). "Public Administration: A Comparative perspective". CRC Press.
11. Riggs, F.W. (1964). Administration in Developing Countries: A Theory of Prismatic society. Houghton Mifflin Co: Boston.
12. Goswami, U.L. (1955). "The Strucher of Development Administration in India". IJPA Indian Insititiute of Public Aministration. Vol.1. January-March. Pg. **110-118.**
13. अवस्थी, प्रो0 आनंद प्रकाश. (2007). 'विकास प्रशासन'. लक्ष्मीनारायण अग्रवालः आगरा. पृष्ठ **6.**
14. कटारिया, डॉ0 सुरेन्द्र. (2003). 'तुलनात्मक लोक प्रशासन'. आर.बी.एस.ए पब्लिशर्सः जयपुर. पृष्ठ **131.**
15. वही. पृष्ठ **131.**
16. रिग्स, एफ. डब्ल्यू. (1971). फ्रंटियर्स ऑफ डेवलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन. पृष्ठ **4.**
17. रग्स, एफ. डब्ल्यू. (2007). 'प्रिज्मैटिक सोसायटी'. पृष्ठ **14.**
18. रिग्स, एफ. डब्ल्यू. (1966). "एडमिनिस्ट्रेटिक डेवलपमेंट इनक्लूसिव कान्सेप्ट". मॉण्टगोमरी एण्ड सिफिन. (सम्पादित). एप्रोचेज टू डेवलपमेंट. पृष्ठ **259.**

19. जोशी, प्रो0 प्रीता. (2011). 'विकास प्रशासन'. आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्सः जयपुर. पृष्ठ **20.**
20. रिग्स, फैड. (सं0). (1970). 'फ्रंटियर्स ऑफ डेवलपिंग एडमिनिस्ट्रेशन'. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेसः डरहम. पृष्ठ **6–7.**
21. कोठारी, रजनी. (1972). पोलिटिक्स इन इण्डियन. ओरियंट लांगमेनः नई दिल्ली. पृष्ठ **411–112.**
22. वहीं. पृष्ठ **230.**
23. खोसला, जे.एन. (1967). डेवलेपमेंट एडमिनिस्ट्रेशन न्यू डायमेन्शन्स. आईजेपीए, इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन. भाग–13. पृष्ठ **1.**
24. चतुर्वेदी, टी.एन. (1996). तुलनात्मक लोक प्रशासन. रिसर्च पब्लिकेशन्सः जयपुर. पृष्ठ **106.**
25. अरोरा, रमेश. (2006). तुलनात्मक लोक प्रशासन. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमीः जयपुर. पृष्ठ **125.**
26. वुड, डब्ल्यू. (1967). डेवेलपमेंट एडमिनिस्ट्रेशनः एन ओब्जेक्शन. इन्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन. खंड–13.
27. कटारिया, डॉ0 सुरेन्द्र. (2003). 'तुलनात्मक लोक प्रशासन'. आर.बी.एस.ए पब्लिशर्सः जयपुर. पृष्ठ **138.**
28. Would, W. (1967). "Development Administration an Objection". IJPA. Vol. 13.
29. सिन्हा, मनोज. (2010). प्रशासन एवं लोकनीति. ओरियंट ब्लैक स्वान. पृष्ठ **116.**
30. Sapru, R.K. (2012). "Development and Development Administration". Sterling Publishers Pvt. Ltd.: New Delhi. Pg. **5.**
31. Sapru, R.K. (2012). Development Administration. Sterling Publishers Pvt. Ltd.: New Delhi. Pg. **83.**
32. Ibid. Pg. **84.**
33. Ibid. Pg. **85.**
34. Singhal, Arvind. (1989). "Evolution of Development Administration". IJPA. Indain Institute of Public Administration: New Delhi. Oct-Dec. Pg. **847.**
35. Ibid. Pg. **847.**
36. मिश्रा, डॉ0 नन्दलाल. (2000). 'विकास की चुनौतियाँ एवं अन्तर्द्वन्द'. (21वीं सदी की दहलीज). बी.एस. शर्मा एण्ड ब्रदर्शः आगरा. पृष्ठ **45.**
37. (1992). World Development Report. Oxford University Press: New York. Pg. **8.**
38. William, J. Baumol., Benhabile, J. (1989). "Chaos: Significance, Mechanism and Economic Applications". *Journal of Economic Perspectives*. Vol. 3. Pg. **77-106.**

39. जोशी, प्रो0 प्रीता. (2011). 'विकास प्रशासन'. आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्सः जयपुर. पृष्ठ **177.**
40. Sapru, R.K. (2013). "Development Administration". Sterling Publishers Pvt. Ltd." New Delhi. (ed). World Commission on Environment and Development. our Common future. 1987. Oxford University Press: New York. Pg. **43.**
41. Dasgupta, Partha., Maler, Karl G Oran. (1990). "The Enivronment and Emerging Development Issues". Proceeclings of the World Bank. Annual conference on Development Economics. (Washington: world Bank, 1990). Pg. **101.**
42. जोशी, प्रो0 प्रीता. (2011). 'विकास प्रशासन' आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्सः जयपुर. पृष्ठ **177–178.**